UNIT II B

Date: / /

(दहेज)

दहेज हिन्दू विवाह से सम्बन्धित एक गम्भीर समस्या है। मानव जीवन मे स्त्री व पुरुष दोनो का समान महत्व इसके बावजूद भारतीय हिन्दू परिवारो मे लड़कियों का जन्म होना दुख का कारण बनता है। इनमे मुख्य है। लम्बे समय तक कुँवारेपन का होना अविवाहित रहन जाना लड़कियो को सताया जाना नव वधुओं को जलाया जाना और कानुनी तरीके से आय बढाना आदि

दहेज का अर्थ एवं परिभाषाएँ

साधारण अर्थ मे दहेज का अभिप्राय उस धन का उपहारो व वस्तुओ से है। जो पत्नी विवाह मे अपने पति के लिए लाती है। भारतीय समाज मे दहेज इसी रूप मे कन्या पक्ष सम्बन्धित है

चार्ल्स विनिक – ने दहेज को इस रूप मे परिभाषित किया है। "वे मुल्यवान वस्तुएँ जो विवाह से सम्बन्ध रखने वाले दोनो ओर मे से किसी एक के द्वारा विवाह के लिए दी जाती है।

मैक्स रेडिन ने दहेज को परिभाषित करते हुए लिखा है। दहेज वह सम्पति है एक व्यक्ति विवाह के समय अपनी पत्नी या उसके परिवार से प्राप्त करता है।

ब्रिटानिका शब्द कोश मे दहेज की परिभाषा दी गई है। दहेज वह सम्पति है। जो एक स्त्री विवाह के समय अपने साथ लाती है। या उसे दिया जाता है।

Date: / /

वेबस्टर शब्दकोस —
दहेज का अभिप्राय वह धन या सम्पत्ति से है। जो कन्या पक्ष की ओर से वर - पक्ष को विवाह शर्त के रूप मे देने की व्यवस्था है। समान्य शीति रिवाजो के अनुसार लड़की का पिता अपनी इच्छा से जो कुछ वर पक्ष को देता है इसे भी दहेज व वर मुल्य मे माला का भ

दहेज प्रथा के कारण
दहेज प्रथा की उत्पति अथवा प्रचलन अनेक कारणो से हुआ जिसमे से प्रमुख है

(1) दहेज एक सामाजिक प्रथा के रूप मे
दहेज का प्रचलन भारत मे एक सामाजिक प्रथा के रूप मे पाया जाता है। प्रथा के अनुसार व्यक्ति अपनी पुत्री के विवाह के समय धन देता है। इस प्रकार अपने पु के विवाह मे धन प्राप्त करना चाहता है यह कहना उचित नही है। है कि दहेज प्रथा मे वर्तमान मे ही जन्म लिया है।

(2) जीवन साथी चुनने की सीमित क्षेत्र
दहेज व्यवस्था को बढ़ाने मे जाति व्यवस्था का भी महत्वपुर्ण स्थान है। हर व्यक्ति अपने जीवन साथी चयन करने का अधि दिया गया है। और वर मुल्य मे वृद्धि हो जाती है। यदि ब्राम्हण लोग सि अपनी ही जाति मे विवाह करने का प्रयास करते रहे या वैश्य लोग अप जातिगत सिद्धान्तो के अधार पर विवाह करते है।

Date: / /

③ धन के महत्व मे वृद्धि — जैसे जैसे धन के महत्व मे वृद्धि होती जा रही है दहेज प्रथा भी बढ़ती जा रही है। माँ बाप लड़की के विवाह के समय अधिक दहेज देना अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा समझते है।

④ बाल विवाह — बाल विवाह के प्रचलन के कारण भी दहेज प्रथा मे वृद्धि है। बालको का विवाह करने के कारण वर या वधु को चुनाव का अवसर प्राप्त नही होता। ऐसी स्थिति मे माता पिता ही लड़के लड़की का चयन करते है। जिसमे वे कन्या पक्ष से मनमानी रकम दहेज के रूप मे प्राप्त करते है।

दहेज की समस्या का निराकरण

① स्त्री शिक्षा — भारतीय समाज के जैसे जैसे परिवर्तन हुआ। हमारा समाज भी उन्ही सामाजिक कुरीतियों का शिकार है जो इसमे सौ दो सौ वर्ष पूर्व भी प्रचलित है। इसे दूर करने के लिए आवश्यक है। कि भारतीय नारी समाज से अशिक्षा और कुसंस्कारो का अंत किया जाय। यदि लड़कियाँ भी शिक्षा पूरी होने पर लड़को के समान नौकरी या व्यवसाय करने लगे तो उन्हे पुरुष की दया का पात्र बनने की लिए बाध्य नही पड़ेगा।

② अन्तर्जातीय विवाहो का प्रोत्साहन → दहेज प्रथा की समाप्ति के लिए अन्तर्जातीय विवाहो को प्रोत्साहन देना। इससे विवाह का क्षेत्र बड़ा होता है। अगर लड़के लड़की को स्वयं जीवन साथी के चयन की स्वतंत्रता मिल जाय

Date: / /

(3) जनमत तैयार करके -
दहेज प्रथा के विरुद्ध जनमत तैया
करके इस बुराई के दुष्परिणामों के प्रति
जागरूकता लानी होगी। केवल कानून बनाने
चाहिए केवल मात्र कानून बना देने से को
बुराई समाप्त नहीं हो सकती

(4) जीवन साथी के चयन मे लड़के लड़कियां की स्वतंत्रता
जहां माता पिता के द्वारा जीवन स
का चुनाव किया जाता है। वहाँ प
सौदेबाजी अधिक होती है। वहाँ पर
की रकम का निर्धारण पहले होता है
इस स्थिति को समाप्त के लिए लड़के
लड़कियां को वर वधु का चयन करने
अधिकार अपने हाथ मे लेना चाहि
लड़के लड़की की जीवन साथी चुनने
स्वतन्त्रता होने पर अपने आप दहेज
समाप्त हो जाएगी।

(5) दहेज प्रथा के विरुद्ध कठोर का
की आवश्यकता
इस प्रथा को समाप्त करने की दृष्टि
कठोर बनाने चाहिए यदि कानून की
निर्दोष हो और सरकार उसे कठोरतापूर्व
लागु करने का प्रयास करे तो हमे शी
ही कानुन की उपयोगिता का पता च
जाएं ही यह अत्यन्त आवश्यक है।

Date: / /

बुजुर्गों की समस्या

पिछले कुछ दशकों में प्रत्येक देश की जनसंख्या में बुजुर्गों की संख्या में प्रयाप्त वृद्धि हुई है और साथ ही वृद्धावस्था में विश्वस्तर पर एक सामाजिक आर्थिक एवं मानवीय मामला है। सन् 1982 में वियना में वृद्धावस्था के सम्बंध में एक विश्व समेलन आयोजित किया गया 1999 को बुजुर्गों के सम्मान में अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध वर्ष घोषित किया गया भारत में वर्ष २००० को राष्ट्रीय वृद्ध वर्ष के रूप में मानने का निश्चय किया। 50 वर्षों में व्यक्ति की औसत आयु में २० वर्ष से भी कुछ अधिक की वृद्धि हुई। 50 वर्ष पुर्व व्यक्ति की जो आयु थी उसकी तुलना मे आज वे ~~20~~ साल से अधिक जीवित रहते है।

1995 में जीवन प्रत्याशा 65 वर्षों से भी कुछ अधिक हो गयी है। सन् 1901 में 60 वर्षों से अधिक उम्र की अबादी का आकलन 1.2 ~~आबादी 7.57 करोड तथा सन् 2025 में 14.61~~ करोड़ किया गया जो सन् 2025 मे 14.61 करोड़ हो जाने का अनुमान है। 80 वर्षों से अधिक आयु वर्ग वाले लोगो की संख्या 36.3 लाख सन् 2050 तक 1.06 करोड़ तक हो जाने का अनुमान है। आक्सफोर्ड डिक्शनरी — के अनुसार समान्य जीवन के परावर्ती कालको वृद्धावस्था कहा जाता है।

Date: / /

वृद्धो की प्रमुख समस्याएँ

1. सामाजिक सांस्कृति समस्याएँ
2. आर्थिक समस्याएँ
3. स्वास्थय सम्बधी समस्याएँ
4. जीवन के प्रति परिवर्तित रुख की समस

भारत मे गरीबी एवं निम्न आय के म वृद्ध लोग अपने पुत्रो और अन्य सदस्यो पर आश्रित हो गये है। पुरुषो की कुल शक्तियो का अनुपात है।

वृद्धावस्था के कारण स्वास्थय सम्बधी जो कु गड़बड़ियाँ सामने आती है वे है मोटापा ओस्टिओ आर्थराइटिस चिन्ता तनाव एवं कब्ज आदि कई बिमारियां को निपाब्ति किया जा सकता है ~~वृद्ध~~ वृद्धावस्था के स्वास्थ्य को उतना महत्व नही मिल पाता है। जितना मिलना चाहिए। ग्रामीणो मे बुजुर्ग स्वयं प्राथमिक स्वास्थय केन्द्र तक नहीं पहुंच पाते है। जिनके पास आर्थिक साधनो की अभाव ~~क~~ वृद्धो की कुल संख्या मे से लगभग 33% लो गरीबी रेखा से नीचे है। तथा अन्य 33% लोग गरीबी रेखा से ऊपर है। ऐसे लोगो के लिए आर्थिक असुरक्षा की स्थिति बनी रहती है।

राष्ट्रीय स्तर पर हेल्पेज इण्डिया अपनी २२० परियोजनाओ के माध्यम से यह कार्य कर रही है। इन परियोजनाओ मे लघु उद्योग, वृक्षारोपण, चारा, उत्पादन, मछली, उत्पादन पशुपालन तथा मोमवती व लिफाफे

Date: / /

आदि बनाना शामिल है।
परिजनों से अलगाव के कारण कई वृद्धजनों मे अकेलापन निराशा एवं अप्रसन्नता जैसे दुष्परिणाम उत्पन्न हो सकते है। वृद्ध लोग आपने आपको दुसरो पर बोझ महसूस करते है। ऐसे लोग अकेलेपन एवं दु:ख दर्द की उनकी बात किसी सुनने वाले के नही होने से अपने जीवन से ऊब जाते है। यदि ऐसे वृद्ध लोगो मे पति पत्नी मे से एक की मृत्यु हो जाती है तो दुसरे के लिए एकाकीपन की समस्या की समस्या और भी बढ़ जाती है। वृद्ध लोग दिन के समय इन केन्द्रो पर रहते है। लोगो को अन्य वृद्धो के साथ अपना दुख दर्द बाटने का भी मौका मिल जाता है।
ऐसे वृद्ध लोग जिनको देखभाल करने वाला कोई नही है। और जो परिवार की उपेक्षा का शिकार है के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनो के द्वारा वृद्धागृह चलाए जाते है। भारत मे वृद्ध वृद्ध गृहो की संख्या 855 है। वृद्धोकी बढ़ती हुई जनसंख्या को ध्यान मे रखकर यह कहा जा सकता है। भारत के संविधान मे बुजुर्गो के कल्याण की ओर विशेष ध्यान दिया गया अब तक देशो मे जो कल्याण योजनाएँ लागू की गयी। वृद्धो के सम्बन्ध मे राष्ट्रीय नीति के प्रावधानो की दृष्टि मे रखते है।
सन 1999 एवं राष्ट्रीय वृद्धजन परिषद् की स्थापना की गयी। वर्ष 2000 मे परिषद् ने वृद्धजनो के लिए एक कार्ययोजना तैयार की जिसका अर्थ है। वृद्धावस्था मे सामाजिक और आमदनी सम्बन्धी सुरक्षा जिससे प्रत्येक युवक अपनी कामकाजी जिंदगी मे इतनी बचत करले कि उसे बुढ़ापे मे गरीबी का सामना न करना पड़े और साथ ही राज्य पर भी ज्यादा बोझ न पड़े।

Date: / /

आतरिक एवं अन्तरपीढी संघर्ष

अंतपीढी संघर्ष का अर्थ

जहाँ एक ही पीढी के लोगो के बीच किन्ही कारणो से आपस मे तनाव वैमनस्य एवं संघर्ष की स्थिती पायी जाती है। एक ही पीढ़ी के सम्बन्धित हो धार्मिक गुटो को मध्य पाये जाने वाला संघर्ष भी अन्तःपीढी संघर्ष ही है।

वहाँ राजनितिक विचारधारा पर लोग अलग अलग विचारो मे बट जाता है। कुछ सामाजिक परिवर्तन लाने हेतु हिंसक तरीको मे परतो अन्य विश्वास करते है।

परिवार और जाति के क्षेत्रो मे भी पारस्परिक सम्नवय के अभाव के कारण आजकल अंतःपीढी संघर्ष देखने को मिलते है।

गांवो मे पंचायतीराज संस्थाओ मे भी विभिन्न बातो पर एक ही पीढी के लोग के लोगो के बीच संघर्ष पाया जाता है।

शिक्षा के प्रमुख केन्द्रो विश्व विद्यालयो तक मे अन्तःपीढी संघर्ष प्रतिदिन बढता जा रहा है।

अन्तः पीढी संघर्ष के कारण

(1) आधुनिक शिक्षा → अंतःपीढी संघर्ष का एक कारण आधुनिक शिक्षा भी है। शिक्षा से न केवल व्यक्तियों की अभिव्रतियाँ बदलती है, वरन् विश्वास, आदर्श और मुल्य भी बदले है। शिक्षा का विस्तार से स्त्री पुरुषो के जीवन दर्शन मे परिवर्तन आया है। स्त्रियो को नये आयाम मिले है।

Date: / /

पुरानी पीढ़ी आधुनिकता को आसानी से स्वीकार नही करती । दूसरी ओर नयी पिढ़ी भी पुरानी पीढ़ी को अव्यावहारिक और महत्व हीन समझती है।

7) नगरीकरण की प्रक्रिया — अन्तर - पीढ़ी संघर्ष को प्रभावित करने मे नगरीकरण की प्रक्रिया भी सहायता है। भारत मे शहरीजनसंख्या १७वी सदी मे 10% मे जो 1990 मे 52.30% तक बढ़ गयी तेजी से बढ़ रहे नगरीकरण ने व्यक्तियो की मनोवृतिया ने अनेक परिवर्तन उत्पन्न किये है। यहां प्रत्येक पुरानी चीज को व्यर्थ माना जाता है। यहां संयुक्त परिवार मे स्थान पर एकाकी परिवार हुत होता है। परिवार मे भी प्राय: अविवाहित लड़के लड़कियो को ही सम्मीलित किया जाता है। नगरो मे लड़के लड़किया को सम्मिलित किया उत्तरोतर स्वतन्त्रता भोग विलास मौज-मस्ती का जीवन पसन्द करते है।

8) औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया — भारत मे १९वी सदी के अन्त और २०वी सदी के प्रथमार्ध मे औद्योगिकीकरण प्रारम्भ हुआ भारत का प्रत्येक गाँव एक स्वतन्त्र है। घरेलू इकाई आर्थिक विनिमय की इकाई भी पिता-पुत्र और भाई-भाई के मध्य कोई व्यावसायिक भेद नही था परिवार पहले उत्पादन की प्रधान इकाई होतीथी जो अब उपयोग की इकाई हो गया है। सन्ताने अब सम्पाति न होकर दायित्व हो गये है।

9) युवाओ की बढ़ती हुई शक्ति — अंतर - पीढ़ी संघर्ष का एक कारण यह भी है। मॉवरर के अनुसार — अब युवा अधिनस्थ नही रहे, अब उनकी इच्छा को दबाया नही जा सकता है।

Date: / /

किंग्सले डेविस के शब्दों — मे आधुनिक समाज मे माता पिता औ सन्तान मे संघर्ष असाधारण रूप से वह ग वर्तमान पीढ़ी अपने जीवन का स्वयं भाग निर्माता बनना चाहती है। पुरानी पीढ़ी उस कोई अनावश्यक हस्तक्षेप व व्यवधान उत्प करे

~~यह~~ पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव — यह भी अन्तर प संघर्ष का एक उल्लेखनीय कारण है। युवा पीढ़ी सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से पूर्णतया पाश्चात्य रंग मे रंग गयी है उसका खान पान रहन-सहन बोल चाल आचरण एवं व्यवहार मनोरंजन आदि जबकि पुरानी पीढ़ी इससे अपना समायो नहीं कर पा रही है

सादा जीवन उच्च विचार की समर्थक नयी पीढ़ी "खाओ पीओ और मौज उड़ाओ" की है

अन्त: पीढ़ी के संघर्ष के उपाय

(1) व्यक्तित्व का सन्तुलित विकास — मनोविज्ञान का विचार है। कि अन्त: पीढ़ी संघर्ष की उत्पत्ति को रोकने के लिए लोगों के व्यक्तित्व का संतुलित विकास होना। क्योंकि ऐसा करने से एक उनमे पूर्वाग्रहों की उत्पत्ति न हो सकेगी

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान — के प्रचार समायोजन दोषों के उपचार त

Date: / /

निर्देशन सेवाओं के विस्तार की अति आवश्यकता है।
शिक्षा - के. जी. सैयदेन - का कथन है कि अन्त: पीढ़ी संघर्ष की रोकथाम के लिए बालकों को विभिन्न संस्कृति धर्मों तथा सम्प्रदायों की मूल्यवान बातो की शिक्षा व्यवस्था करनी चाहिए,

स्वस्थ जनमत का निर्माण — अन्त: पीढ़ी संघर्ष के निवारण के देश व्यापी स्वस्थ जनमत का निर्माण करना अति लाभप्रद सिद्ध होगा। इसके लिए पत्र पत्रिकाओं सम्पादकों राजनैतिक नेताओं सामाजिक कार्यकर्ता शिक्षकों चलचित्र रेडियो इत्यादि द्वारा ऐसे विचारों का प्रचार करना चाहिए

आर्थिक सुधार — ऐसी स्थिति मे इन समस्याओं का निकारण करना अति आवश्यक हो जाता है। इसके लिए जहाँ एक और सम्पूर्ण देश की आर्थिक उन्नति के लिए कृषि तथा उद्योग धन्धो के बढावा दिया वहाँ उत्पादित सामग्री को वांछित रुप से वितरण करने की भी व्यवस्था की जायन्

सामाजिक सुधार — अन्त: पीढ़ी संघर्ष के लिए सामाजिक समस्याओं का समाधान करना अति आवश्यक है। क्योंकि जहा ये अन्त: पीढ़ी संघर्ष का रुप होता है। वहा उसका कारण भी होता है।

Date: / /

उपभोक्तावाद

उपभोक्तावाद का अर्थ एवं परिभाष

अमेरिकी राष्ट्रपति जान एफ. कैनेडी ने मे और राष्ट्रपति जानसन ने उपभोक के अधिकारो पर बल देते हुए सयुक राज्य अमेरिका एवं अन्य देशो मे उप के प्रेरणा दी उपभोक्ता अधिकारो के अभाव मे उपभोक्ताओ की एक बड़ी भा संख्या को प्रतिबन्धात्मक एवं कपट पूर्ण व्यवहार का शिकार बनाना पड़ता था जनता मे अपने उपभोक्ता अधिकारो के चेतना जागृत हुई जिसे उपभोक्ता कहा

फिलिप कोहलर के शब्दो – उपभोक विक्रेताओ के सम्बन्ध क्रेताओ के अधिकारो एवं शक्तियो को वितर्क (विवाद) करने का प्रयत्न करने वाला एक सामाजिक आन्दोलन है।

उपभोक्तावाद के लाभ और महत्व

उपभोक्ताओ को उपभोक्तावाद मे अपने अधिकारो की सुरक्षा और संरक्षक साधन रुप स्वीकार करना चाहिए / उपभोक्तावाद वह सामाजिक शक्ती है जो व्यापार को आधिकारो की सुरक्षार्थ आवश्यक उपाय के लिए दबाव भी डालता है।

पीटर एफ. ड्रकर – के अनुसार यद्यपि उपभोक्ता वादी अवधारणा का व्यापक प्रयोग नही हुआ

Date: / /

इसने विपणन धारणा की असफलता को प्रकाशित किया है। उपभोक्तावाद यह भी बताता है। व्यापार नितियों का समाज के प्रति झुकाव भविष्य में समाज कल्याण में वृद्धि करेगा।

फिलिप कोटलर – के शब्दो में व्यापारी ऐसा करने के लिए बाध्य होगा क्योंकि इस सम्बध में प्राप्त असफलता उसके दीर्घगामी हितो पर कुठारा घात करेगी।

उपभोक्तावाद के परिणाम – उपभोक्ता के कारण उत्पादक और विक्रेता उपभोक्ता को अपनी जागीर नही समझेंगे
उपभोक्ता व्यापार के लिए प्रतिपुष्टि या पालनकर्ता
यह अधिक प्रभावशाली ढंग से विपणन संकल्पना को समझने मे सहायता करता है।
व्यापार मे जमाखोरी एवं कालाबाजारी के कारण बाजार की आपुर्ति स्थिति खराब हो जाती है
उपभोक्ता से उत्पन्न और प्रेरित उपभोक्ता और उत्पादक का सरकार को और भी अधिक उपभोक्ता हितो की सुरक्षार्थ उत्तरदायी बनायेगा।

उपभोक्ता संरक्षण कानून 1986

उपभोक्ता संरक्षण से अभिप्राय के शोषण के विरुद्ध उसका संरक्षण करने से है। उपभोक्ताओं के अधिकारो एवं हितो की रक्षा करना तथा शोषण विरुद्ध उन्हे समुचित सहायता पहुचाना ही उपभोक्ताओं संरक्षण है। अधिनियम 1986 उपभोक्ता के हित संरक्षण के क्षेत्र मे एक व्यापक और महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ है।

Date: / /

इस अधिनियम के समस्त प्रावधान 1 जुलाई 1987 से पूरे देश मे प्रभावी हुए इस अधि के अन्तर्गत जिला फोरमों राज्य आयोग राष्ट्रीय आयोग का गठन किया गया

उपभोक्ता संरक्षण हेतु उपाय

(1) भारतीय उपभोक्ताओ के सामने अधिक समस्याएँ उसकी अशिक्षा के कारण आती अतः उपभोक्ता की उदासीनता एवं अज्ञानता को दूर करने हेतु उपभोक्ता को सामान्य देने की व्यवस्था करना जरूरी है

(2) सरकारी कानूनो को ईमानदारी से लागू करना होगा भारतीय उपभोक्ताओ हित मे निर्मित कानूनो का साहित्य आवश्यक है

(3) उपभोक्ता हित संरक्षण से सम्बन्धित विभागो के अधिकारियों एवं कर्मचारि के निष्ठापूर्वक अपने कर्तव्यों एव दायित्वों का करना चाहिए

(4) उपभोक्ताओ को संगठित होकर अप शोषण के विरुद्ध खड़ा होना चाहिए क्योंकि उत्पादक और विक्रेता उपभोक्ताओ असंगठित होने का सर्वाधिक लाभ उठा सकता

(5) देश के ग्रामीण क्षेत्रो अशिक्षितों और महिलाओ के शिक्षण प्रशिक्षण के विशे रूप से व्यवस्था की जानी चाहिए

Date: / /

आदर्श नियम एवं मूल्य

समाज शास्त्रीय अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय आदर्श नियमो एवं मूल्यो की व्याख्या करना है। इसे अभाव मे समाज की कल्पना नही की जा सकती
वीयरस्टीड के शब्दो मे " जहा आदर्श नियम नही है। वहा समाज भी नही है। जब समाज के व्यक्तियो के द्वारा उसका पालन किया जाता है। तो उसमे सहयोग का विकास होता है।

आदर्श नियमो का अर्थ एवं परिभाषाएँ

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह हर पल व हर क्षण समूह मे जीता है। जब अनेक व्यक्ति अन्तक्रियाया करते है। समूह व्यवहार के इन मामलो को आदर्श नियम कहा जाता है।

सेकार्ड एवं बकमैन - ने लिखा है। आदर्श नियम किसी समूह के सदस्यो द्वारा स्वीकृत व्यवहारिक प्रत्याशा अथवा मानक होता है।

अ- आदर्श नियम समूह द्वारा मान्य व्यवहार के नियम या मानक होते है।

ब- ऐसे सामाजिक नियम कहा जाता है। जिसके निर्वाह की अपेक्षा समाज व समूह के व्यक्तियो से की जाती है।

ब्रूम एवं सेल्जनिक के अनुसार- आदर्श नियम व्यवहारिक का रूपरेखा है। जो उन सीमाओ का निर्धारण करते है।

(अ) आदर्श नियम व्यवहार के नियम है।
(ब) इसमे छोटे बड़े विभिन्न नियम व उपनियम शामिल है
(स) आदर्श नियम एक प्रकार का अंकुश है।
(द) ये आवश्यकताओ की पुर्ती के साधन के रूप मे कार्य करते है।

Date: / /

डेविस – के शब्दो मे सामाजिक आदर्श नियम एक प्रकार के नियन्त्रण है। मानव इन्ही नियन्त्रणो के बल पर अपने सदस्यो व्यवहारो पर इस प्रकार अंकुश रखता है

(अ) आदर्श नियम व्यक्ती के व्यवहारो पर नियंत्रण का ढ़ग है।

(ब) वह व्यक्ति के व्यवहारो के नियन्त्रित कर समाज के अनुकुल बनाता है

(स) इसके फल स्वरूप सामाजिक अवश्यकता की पुर्ती सम्भव होती है।

आदर्श नियमो की विशेषताएँ

(1) सामाजिक नियम – आदर्श नियम सामाजिक नियम है।
इसमे छोटे वड़े विभिन्न व नियम व उपनियम शामिल है। प्रत्येक व्यक्ति से आदर्श नियम का पालन करने की उमीद की जाती है

(2) मानव अस्तित्व के लिए –
आदर्श नियम मानव आस्तित्व के अभिन्न है। प्रत्येक आदर्श नियम का विकास व पालन किसी न किसी अवश्यकता पुर्ती से सम्बन्धित है। आर. बीयरस्टीड के शब्दो मे जहा आदर्श नियम नही है। वहा समाज भी नही है।

(3) जीने की विधि – आदर्श नियम मानव के जीने की विधी है। इसके अनुसार आचरण करने के लिए व्यक्ति को विशेष प्रयास नही करने पड़ते

Date: / /

बिना अधिक सोचे विचारे ही मनुष्य इसके अनुसार व्यवहार करता रहता है।

④ नियन्त्रण की प्रविधि – आदर्श नियम नियन्त्रण की प्रमुख प्रविधि है। जिसका उल्लेख के. डेविस ने किया है। सामाजिक आदर्श नियम एक प्रकार के नियन्त्रण है। मानव समाज इन्ही नियन्त्रणो के बल पर अपने सदस्यो की व्यवहार पर इस प्रकार अंकुश रखता है। जिसमे वे सामाजिक अवश्यकताओ की पुर्ती के साधन के रूप कार्य करते है।

⑤ संस्कृति के अंग – आदर्श नियम संस्कृति के अंग है। राबर्ट वीयरस्टीड ने संस्कृति के तत्वो को दो भागो मे विभाजित किया है ① अभौतिक तत्व ② और अभौतिक तत्व आदर्श नियम और विचार। व्यक्ति के व्यवहारो का संचालन के समाज स्वीकृत नियम ही आदर्श नियम है जैसे– नियम–कानून–संस्कार–जनरीतिया–लोकाचार प्रथाएँ परम्पराएँ निषेध आदि

मुल्यो का अर्थ एंव परिभाषाएँ =

सामाज शास्त्र की एक विशिष्ठ शाखा मुल्यो का सामाज शास्त्र है। मूल्य समाज के अधार है। मानव समाज और पशु समाज मे जो अन्तर है वह मूलत: मुल्यो पर आधारित करता है। राधाकमल मुखर्जी का कार्य बड़ा महत्व पूर्ण है इन्होने इस पर एक पृथक पुस्तक द शोसल स्ट्रकचर ऑफ वैल्युज लिखी है। जो अपने आप मे अनूठी है।

उदाहरण हिन्दु विवाह से सम्बधित मुल्य है। अपनी जाति मे विवाह होना तथा विवाह को धार्मिक संस्कार माना जाता है।

Date: / /

राधाकमल मुखर्जी के अनुसार मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएँ तथा लक्ष्य है। जिनका अन्तरीकरण सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है

एच. एम. जॉनसन — के शब्दों मे मूल्यों को एक धारणा या मानदण्ड के रूप मे परिभाषित किया जा सकता है इनके द्वारा वस्तुओ की तुलना की जाती है स्वीकार या अस्वीकार की जाती है। एक दूसरे की तुलना मे उचित या अनुचित अच्छा या बुरा ठीक या गलत माना जाता है। जैसे हिन्दुओ के विवाह सम्बन्धी एक मूल्य है। अर्न्तविवाह वह तुलनात्मक है। जो मूल्यो के द्वारा वस्तुओं का मूल्यांकन किया जा सकता है।

जे ब्रोनोवस्की ने लिखा है। एक मूल्य वह अवधारणा है। जो समाज समाज मे व्यवहार के कुछ प्रकार के एक साथ जोड़ देती है।

थामस एवं जैनिकी के शब्दो मे मूल्य वे वस्तुएँ है। जो एक सामाजिक समूह के सदस्यों के लिए कुछ अर्थ एवं लक्ष्य रखते है। इससे पता चलता है। कि एक मूल्य आॅब्जेक्ट है। ये व्यक्तियों के लिए महत्व पूर्ण होता है। इन मूल्यो के आधार पर व्यक्तियों के व्यवहार प्रभावित होते है जो कालेज मे शिक्षक सहकर्मी व व्यवस्था के अंग के रूप मे मूल्य है। उसी प्रकार विवाह

Date: / /

सामाजिक सहवास आर्थिक जीवन व राजनीति आदि

मूल्यो की विशेषताऐं -

① सार्वभौमिकता — मूल्य में सार्वभौमिकता का गुण पाया जाता है। यह विश्वव्यापी है। व्यक्ति द्वारा कि जाने वाली क्रियाये मूल्यो द्वारा ही निर्धारित होती है। जैसे भारत के हिन्दुओं मे विवाह विच्छेद को सही नही माना जाता जबकि अमेरिकन समाज मे इसे सही माना जाता है

② प्रतीकों — मूल्यो को प्रतीको के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। मूल्यो का अर्जन प्रतीको के द्वारा ही सम्भव है।
मुखर्जी- ने प्रतीको का स्पष्ट करते हुऐ लिखा है। मूल्य मानवीय सम्बन्धो के संचार एवं नियन्त्रण के वाहन है।
जैसे— माता पिता का आदर देना मूल्य है। इस मूल्य का प्रतीक माता पिता की सेवा या चरण छूना

③ गतिशीलता एव परिवर्तनशीलता — मूल्यो की गतिशीलता एव परिवर्तनशीलता का गुण पाया जाता है। कभी कभी नये मूल्यों विकसित होते है। कभी कभी प्रचलित मूल्य संशोधित होते है।
जैसे— स्त्री व पुरुष के बीच समानता का मूल्य आज विशिष्ट से आम होने की बात है।

④ सांस्कृतिक तत्व - मूल्यो की संस्कृतिविशेष सेसम्बध देखा जा सकता है।

Date: / /

जैसे— अभिवादन के ढंग से सम्बाधित मूल्यो मे दो समाजो मे भिन्ता देखी जाती है इसके बावजूद समाज मे कई मूल्य ऐसे भी पाये जाते है।
जैसे— ईमानदारी कार्य संस्कृति सत्य व अहिंसा आदि से जुडे मूल्य

सामाजिक व्यवहार —

आर. के. मुकर्जी — का कहना है कि समाजशास्त्र विशेष रूप से मूल्यो से सम्बाधित है। समस्त सामाजिक समबन्ध एवं व्यवहार मूल्यो के आधारित है।

अमूर्त — प्रत्येक समाज में दो पक्ष होते है।
① पहला मुर्त होता है। और दूसरा अमुर्त होता है। ये देखे जा सकते है। दूसरा पक्ष वह है। जो अमुर्त है और अनुभव किये जा सकते है।

Date: / /

सामाजिक पारिस्थीतिकी

पर्यावरण का मानव के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। जीवन को सुख समृद्धि पूर्ण बनाने के लिए मनुष्य अनेक प्रकार की अभिक्रियाएँ करता है। इन तत्वो का मानव व समाज पर प्रभाव पड़ता है

सामाजिक परिस्थितिकी का अर्थ एवं परिभाषाएँ

पारिस्थीतिशास्त्र वह विज्ञान है। जो प्राणी के पर्यावरण के साथ सम्बन्धो का विश्लेषण करता है। वनस्पतिशास्त्र ने सर्वप्रथम अपना ध्यान जलवायु भूमि और उस स्थान की प्राकृतिक दशा पर केन्द्रित किया जहाँ पेड़, पौधो उगते है।

नेल्स एण्डरसन — के शब्दो मे मानव पारिस्थीतिकी मनुष्य का सामुदायिक जीवन मे अध्ययन है। कि वह किस तरह अपने निवास क्षेत्र मे स्वयं को समायोजित करता है।

क्युबर — के अनुसार पारिस्थीतिशास्त्र पर्यावरण के सन्दर्भ मे मनुष्य तथा उसकी संस्थाओ का चयन है। स्पष्ट होता है। कि पर्यावरण मुनष्य व उसकी संस्थाओ पर प्रभाव का अध्ययन करता है

आगवर्न और निमकॉफ का कहना है। पारिस्थीति समूहो का पर्यावरण से सम्बन्धो का अध्ययन है। मानव समूहो व जीवो का पर्यावरण के साथ समबधो का अध्ययन पारिस्थीतिशास्त्र करता है

पर्यावरण का अर्थ एवं परिभाषाएँ—

पर्यावरण वह सब कुछ है। जो प्राणी को चारो ओर से घेरे हुए है। जो प्राणी के जीवन के विकास पर प्रभाव डालते है

Date: / /

जैसे — वायु, जल, तापमान मौसम भूमि खनिज पदार्थ आदि कुछ सामाजिक दशायें जैसे सामाजिक संरचना सामाजिक संस्थायें स पहलू सामाजिक समूह सामाजिक मूल्य व प्रति

जैसे — धर्म आदर्श नैतिक भाषा परम्परायें जनरीतियां लोकाचार प्रथायें अविष्कार

ई. ए. रास ने लिखा है, पर्यावरण कोई बाह्य है। जो हमे प्रभावित करती है।

पी. जिसबर्ट के शब्दो मे पर्यावरण वह पूर्ण वस्तु है। जो किसी वस्तु को चारो से घेरती है। और उस पर प्रत्यक्ष प्रभाव डा पर्यावरण वह सब कुछ है। जो किसी जन्तु चारो ओर से घेरे हुए है।

एम. जे. हर्षकोविट्ज के अनुसार पर्यावरण सम्पूर्ण बाह्य परिस्थितियो अ उसका जीवधारियो पर पड़ने वाला प्रभा

सी. सी. पार्क - के अनुसार पर्यावरण क उन दशाओ के समूह से है। मनुष्य को निश्चित समय और स्थान प आवृत करता है।

भौगोलिक पर्यावरण का अर्थ एवं परिभा

भौगोलिक पर्यावरण का सामाजिक जीवन साथ गहरा सम्बन्ध है। मानव अपनी आवश्य की पूर्ति और भौगोलिक दशाओ के आधार करता है। परिवार विवाह धर्म परम्परा रीति रिवाज आत्म हत्या जन्म मृत्यु सामाजि राजनीतिक संस्थाओ आदि —

Date: / /

आर. एम. मेकाईवर एवं सी. एच. पेज-
ने भौगोलिक पर्यावरण को परिभाषित करते हुए लिखा है
भौगोलिक पर्यावरण के निर्माण की इकाइयाँ है। पृथ्वी
पृथ्वी की बनावट भूमी और उसकी बनावट जल तथा
जलवायु पशु पौधे खनिज पदार्थ और अन्य प्राकृतिक
शक्तियाँ।
पी. ए. सोरोकिन - का कहना है। जिनकी रचना
मनुष्य द्वारा नही कि गयी है। और जो
मनुष्य के अस्तित्व का और कार्यो के बिना प्रभावित

सामाजिक जीवन पर भौगोलिक पर्यावरण क प्रभाव -

मानव स्वभाव - वीरस्टीड - का कहना है कि
भौगोलिक दशाएँ मानव स्वभाव
का निर्धारण है। यूरोप के निवासी बहादुर, पराक्रमी
और क्रूर होते है। एशिया के निवासी सज्जन, शान्त
और सरल होते है। क्योंकि यहाँ की जलवायु ऐसी
है। जहाँ हमेशा परिवर्तन नही होता है। उत्तरी
यूरोप के लोग स्फूर्तिवान और मंदबुद्धि के होते है
जबकि दक्षिण यूरोप के लोग स्फूर्तिहीन और
बुद्धिमान होते है।

जनसंख्या और उसका घनत्व - भौगोलिक
दशाएँ जनसंख्या के घनत्व को निर्धारित करती है
अनुकूल जलवायु मे जनसंख्या का घनत्व अधिक रहता है
जबकि प्रतिकूल जलवायु मे प्रति वर्गमील कम
व्यक्ति निवास करते है।

भोजन - भोजन का भौगोलिक दशाओं के साथ
गहरा सम्बन्ध पंजाब व मालवा के निवासी
गेहूँ अधिक खाते है। जबकि बंगाल व छतीसगढ
के निवासी चावल अधिक खाते है।

Date: / /

इसी के अधार पर कमि ने लिखा है। आ
मुझे यह बता दिजिए कि आप क्या खाते है
और मै बता दूंगा कि आप क्या है।

पहनावा — पहनावा का भौगोलिक दशाम
साथ गहरा समबन्ध है। बहा अ
ठण्डक पड़ता है। वहाँ के लोग खाल के
मोटे व चुस्त कपड़े पहनते है। जबाकि
गर्म प्रदेशो के लोग का पहनावा ढीले
पतले कपड़े होते है।

आवास — ठण्डे प्रदेशो के मकानो
खिड़की व दरवाजे कम होगे जा
गर्म प्रदेशो के मकानो मे खिड़की ज्या
होगी तथा उसे अधिक से अधिक हवा
बनाए जाने व प्रावधान है।

व्यवसाय — किस क्षेत्र मे कौन सा उ
स्थापित होगा। जुट के कारखाने
मे अधिक इसलिए है। कि बंगाल की भौ
दशाएँ जुट खेती के लिए उपयुक्त है। राय
मे चावल की पर्याप्त मिले ग्वालियर मे
मिले बम्बई अहमदाबाद नागपुर मे सुती
की मिले आदि का कारण है।

व्यापार चक्र — भौगोलिक दशाएँ अनुकूल
है। तो व्यापार मे समृद्धता अ
तो व्यापार मे अवनति आती भूकंप आका
बाढ़ महामारी आदि प्रतिकुल दशाओ के अ

सड़के — रेगिस्तान मे ऊँट ही अवागमन का
है। पहाड़ी क्षेत्रो मे टट्टू और खच्चर का उ
होता है। यहाँ की सड़के टेढ़ी मेढ़ी व प
होती है। मैदानी भाग की सड़के चौड़ी और
होती है।

Date: / /

सांस्कृतिक पर्यावरण — सांस्कृतिक पर्यावरण का मानव समाज से गहरा सम्बन्ध है। उसका खाना पीना उठना बैठना भाषा जीवन के ढंग रीति रिवाज आदि संस्कृति से निर्धारित व निर्देशित होते हैं।

मैलिनोवस्की — ने मानव की सात आधारभूत प्राणीशास्त्रीय आवश्यकताओं का उल्लेख किया है
① शरीर-पोषक ② उत्पादक ③ शारीरिक आराम
④ सुरक्षा (5) गति ⑥ वृद्धि और स्वास्थ सम्बन्धी

डब्लू. एफ. आगबर्न एवं एम. एफ. निमकॉफ ने सम्पूर्ण पर्यावरण को दो भागों मे बांटा है।
① प्राकृतिक पर्यावरण ② और मानव निर्मित पर्यावरण मानव निर्मित पर्यावरण का एक भाग सांस्कृति पर्यावरण है।

एम. जे. हर्षकोविट — ने लिखा है। संस्कृति पर्यावरण का मानव निर्मित भाग है। प्राकृतिक चीजो से जो कुछ मानव बनाता है। वह उसकी कृति होती है। जैसे- मिट्टी एक प्राकृतिक चीज है। मानव जब इस मिट्टी से ईट बर्तन और मूर्ति आदि बना लेता है। वायु पानी पहाड़ आदि संस्कृति नहीहैं

भौगोलिक या प्राकृतिक पर्यावरण एवं सांस्कृति पर्यावरण मे अन्तर

सम्पूर्ण पर्यावरण का एक हिस्सा प्राकृतिक पर्यावरण है प्राकृतिक पर्यावरण का तात्पर्य सम्पूर्ण पर्यावरण के उस भाग से है
① प्राकृतिक वस्तुओं मे पृथ्वी-भूमि- जल पशु पौधे खनिज पदार्थ आदि सम्मिलित किया जाता है। इसके विपरीत सांस्कृतिक पर्यावरण मे मानव निर्मित भौतिक और अभौतिक दोनो प्रकार की वस्तुएं सम्मिलित हैं। इस प्रकार सांस्कृतिक पर्यावरण उपकरण मशीन मकान प्रथा परम्परा धर्म भाषा सभी का समावेश रहता है।

Date: / /

(2) प्राकृतिक पर्यावरण एक मुर्त अवधारणा है। इसे देखा जा सकता है। एवं स्पर्श किया जा सक
जैसे → पृथ्वी - भूमि - जल आदि
इसके विपरीत सांस्कृतिक पर्यावरण मुर्त तथा अमूर्त दोनो धारणाओ से सम्बन्धित है।
जैसे — उपकरण - टीन मकान आदि
जैसे — परम्परा पर्या धर्म आदि
(3) यह मानव के नियन्त्रण शक्ति से परे व स्वतन्त्र है। दिन रात का आना, वर्षा का होना भूकम्प का आना आदि पर मानव का कोई हाथ नही —
(4) पर्यावरण का प्रभाव मानव पशु-पक्षी वनस्पति आदि पर समान रूप से पड़ता है। इसका प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है।
(5) प्राकृतिक पर्यावरण मे स्थिरता पाई जाती है। इसके विपरीत सांस्कृति पर्यावरण मे अनुकुलन का गुण होता है

सांस्कृतिक पर्यावरण का मानव समाज पर प्रभाव

(1) व्यक्तित्व निर्माण — मानव जन्म से एक जैविकिय प्राणी है। सामाजिक प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्ति सामाजिक प्राणी बनता है। व्यक्ति के जन्म से पुर्व ही यानि माँ के पेट के पेट से ही सांस्कृतिक पर्यावरण का प्रभाव पड़ना प्रारम्भ हो जाता है। व्यक्ति अपने आदतो विश्वासो मान्यताओ और जीवन शैली आदि को निर्वाह करना पड़ता है।

आर्थिक जीवन — किसी भी देश का आर्थिक उन्नति और विकास सांस्कृति दशाओ से निर्धारित होता है

Date: / /

भारत मे अत्याधिक मुल्य होने का बोल बेला होना के कारण यहा आर्थिक विकास के सन्दर्भ मे किया या

प्रोद्योगिक विकास– किसी भी समाज मे प्रोद्योगिकी विकास को उस समाज का सास्कृतिक पर्यावरण प्रभावित करता है। किसी समाज के प्राद्योगिक विकास की दशा क्या होगी भौतिक विकास की दशा स्थान दिया जास या अत्याधिक विकास को अणु शाक्ति का उपयोग उत्पादन चिकित्सा गरीबी अन्त विद्युत निर्माण जन कल्याण के लिए किया जाय

धार्मिक जीवन – धर्म एंव धार्मिक विश्वास सास्कृति पर्यावरण से प्रभावित होता है। किसी समाज मे धर्म का स्वरुप क्या होगा और कितना महत्व दिया जाएगा व्यक्तियो का धार्मिक विश्वास कर्मकाण्ड मूल्यो पुजा विधियो परम्पराओं व व्यवहार का निर्धारण करता है।

राजनितिक जीवन – पर्यावरण का राजनितिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है। इसके द्वारा ही वह निर्धारित होता है कि उस समाज मे प्रजातंत्र होगी या राजतन्त्र या साम्यवाद या स्वराज की कौन सी व्यवस्था होगी भारत मे कानून द्वारा अनुसूचित जाति जनजातियों स्त्रियो व वृद्धो आदि को जो सुविधाएं दी जा रही है। उसमे भी सास्कृति का योगदान है।

Date: / /

पर्यावरण प्रदूषण

मानव की एक प्रमुख समस्या पर्यावरण प्रदू है। मानव की विकासात्मक क्रियाओं के परि स्वरूप पर्यावरण प्रदूषण का जन्म हुआ

पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ एवं परिभाषाएँ —

मनुष्य एव प्रकृति के बीच अटूट सम्बन्ध होता है। यह प्रकृति से विभिन्न तत्वों को ग्रहण करता है। और अपने उपयोग मे लाता है। जब तक मनुष्य प्राकृतिक तत्वों का सयमित उपयोग करता है। लेकिन वर्तमान मे मनुष्य मे संयम का अभाव हो गया है। वह प्रकृति का अंधा धुन्ध दोहन तथा अवशिष्टों तथा वातावरण मे तेजी से उत्सर्जन प्रारम्भ कर दिया

राष्ट्रीय पर्यावरण शोध संस्थान के अनुसार मनुष्य के क्रियाकलापों से उत्पन्न अपशिष्टों के रूप मे पदार्थों एवं ऊर्जा विमोचन से प्राकृतिक पर्यावरण मे होने वाले परिवर्तनों का प्रदूषण कहा जाता है

लार्ड केनेट के अनुसार पर्यावरण मे उन तत्वो या ऊर्जा की उपस्थिति को प्रदूषण कहते है। जिनके उत्पादन का उद्देश्य अब समाप्त हो गया हो जो अचानक निकले हों

① पर्यावरण मे हानिकारक तत्वों या ऊर्जा की उपस्थिति के चलते प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है।